

DPN 6076

Title : वलि विधि | VALI VIDHI

Run. No. 6767

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 10.5 x 29.0

Folios 9

Lines ( in a page ) 12

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor पशुपतिमान् परमाय्

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Paśupatimāna Pahmay.

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

वलित्येन प्रयच्छामि भगवत्यै सुवामहं ॥ नाशयित्वा विपत्तीभ्यो दत्त्वा भोगान् भीषितान् ॥



तत्तादशा जीववर्तियथा तारुयध विधिः विधिमुद्धिविधः ४ या कः ॥ अतः गमनमुत्था ॥ अतः एकमर्कं ला  
 गमसुक्ता क मनु ४ ॥ अतः गोपित्वसु गृध्रा कि विधिना संपदीयत ॥ यत्तु जातिवि (गवण तयाया कि रिदाधिका  
 ॥ अतः ४ गुणिसू (धयोया ध्वनं निवृपित १ वक्राया गतिर्कतर्क आगस्तानकुमागर्त ॥ आयायस्यवर्ति ४ या  
 कः ४ आदी विनिगयत ॥ स्वत्यामाखायिका कां विदसिन्न (थेयववीमिर्त ॥ विवादं वकि नं पूर्व मृषिति ४  
 सरुदवगा ॥ वालयदया निष्कयेत रुद्यकि निद र्जने ४ मृषय ४ पाचू नषिला हिंसा मिष विवर्जितवीक्षा  
 षष्ठी मूलरुतपूष्यमगादिकानवलीन आ ५ ४ ॥ कुरुकु ४ सर्वयगुयका मषादिकान ॥ मृषय किदसा ४  
 पिविवदकं यवस्यर्त ॥ निर्दुयार्थमयकृन्धमार्थकं वसूतृय ॥ विज्ञायहिंसा जनिगमधर्म समक्षेयति ४  
 वीक्षा षष्ठीवति त्वेन जगादसूत्रसं सदि ॥ मषय ॥ ऊयमायू हिंदवा ४ पिपेना ऊय ॥ सूना ४ सर्वसकवक  
 सुंरुयं जातिरा विदी ४ मषय ४ कल्यामाया सुवर्गी तस्यमहीयर्त ॥ वसूधनं गिया ख्यागा होमकर्म निदीयता  
 तस्मात्सर्व ४ सूना ४ सर्वयगु मिळुकिवेवलि न सदवाने सादवीदवयानि रिदान सा ॥ तस्कास्तान गहूतं या











मनः। उमि कः या निः। गुरु दामनूया नयि मे शुने ॥ नमनूया सामान्य वा उचिर्धु दिवर्धु ॥ यकावरुद सुस्याहिनैताय नि कल्याण ॥ यलि  
कानूगुही तस्य विरुष्य रवावु (की) ॥ गुरु लोकावाफिरुत श्रव (धा) कलिगस्यादि ॥ सग ४ पृथुति यो सुवलि प्रणीत वा म्यदं ॥  
आगय वस्वयं कुं मां वलित्व नया जय ॥ यथ रुम व सर्वे नृय त्वव विगषत ॥ सवक उदिता दवी द्विती यम व धानय ॥ वरुधि  
रुस्य नदा द सुनाला सुधुग स्यव ॥ निर्वी यय विवम (धु) पाष्टिया कन कीर्ति ४। शीर्ष कुं यतया द विद्विती य सतिग यत ॥ य  
द्वं जिगधुग ४ धु गि ४ कूठया धिरु ठा कृति ४। सु रतीया विनिदिषु ४ वरुथ मे व धानय ॥ यज्ञात तापी जा काना का नय यथ  
वागुरु ॥ विदिग धु पिनि धु गि ४ सा क्षि रि ४ सय वा दि रि ४। सदि रुयो ४ सदा ख्यात ४ पं व मा ना य य य ॥ वरु विदं ना नय दवी वलित्व  
न निरु पिता ४। या ना वग सा मनु गुरु सा वा धीन सा सु था ॥ उलू काला रुष्टा शुमर्वा घाटा शु सा व सा ४। कन वि का धु का वा धु य  
कुवा का ४ धु का मू यि ज ग य गुरु व द्या जा ह लि ४। ना धु ट का सु था ॥ का व धु वा क ४ या नू धु धु कुली य का ४। प्र वा ४  
कृग न व धु यि व ल का ४ कू कू वा मू यि ॥ तिलि य नू क धी व धु न व वा ख नि ख धु त ४। यां कु दा य दं म क ल्य यं गे ना त्वा  
य का ४। उही का सु खी ती का धु म रु हा नी ग व र्ति का ४। जी वं जी वा धु दा नी ता ४। का य स्या ग ट टि दि ता ४ व क का कि ले गृ धा धु क व द  
धु न खं रु ता ४। यि नी का धु उ रि का ४। सी या पू उ रु मे कु ला ४। क ग ४। सु व धु रा नू धु दा मा या धु पि या र्वा ॥ वं ति रं क धि ता ४। सर्व व  
रु दा वि हा य सा ॥ द धे या य व लित्व न ना य उ का वि रु ग मा ४। न गं वा जा नि रु दा मु व र्क कं दा स ना दि ष ॥ वरु वा रु न क ध्य रं ग रु ॥

2

[illegible]















कादवीसं तुष्टा वज्राय न ॥ तस्मिन् वज्रवसनं ज्ञा विष्वक् क्षयदायया ॥ यथा विरुवताद विकलं रथं कितल्यने ॥ वत्सा  
 विष्वक् उनीषां विषया ॥ यं कियत्तथा स क्षयदाया ॥ कृणुमाकृतयुजा चिता सत्ता ॥ दिक्कया नम ॥ विरुवदं न विष  
 जित ॥ कृणा ॥ सकलं थासहाया संशुदि विजयका ॥ स कुरु थायना दार्थ वाजिम धरु था कुरु ॥ गुरुने मिहिकल  
 नयथा ॥ सज्जनमाय सत् ॥ गोस वा तु विनाते वयदथा कज वाजिनो ॥ जूमिज कृतया ॥ नार्थ दयादाया वलीतथा ॥ गान  
 नानि कायातिनाना युष्यस जायिव ॥ तस्मिन् आयमिर् सत्ता र्थ नन मूधुचनाने न ॥ यत्तु सख्यं तदयनी ॥ उक्ता कात्यायना वि  
 र्त्त ॥ तस्मिन् सख्यं दवा मेला विरुवविरुले ॥ गतदवाया ॥ हलवकं वक्रु भू विन गुरु ॥ दिग्गया लम धं हि विना वाजि  
 मर्थ विना गथा ॥ नेष ॥ यथा ॥ कुरुथा नदयो गज वाजिनो ॥ यत्तु नखा कुरु यकि या कुरु दधिकं मर्त्त ॥ वृत्त ॥ सा मा न्य  
 वृत्त गय कि वया कुरु यदू ॥ यत्तु विसे वय व कुरु वका धिकायत ॥ यत्तु नामिह स र्वथा शोकन वेक मवहि ॥ क  
 विदि लय उत्त प्ने हल देवा दू दान ॥ ७ ॥ त्ता नान कर्त्त मरुया ॥ १० ॥ यिव स मा नित ॥ ११ ॥ त्ता नान सि धन दाना दिसा क ॥ १२ ॥ हिदात

२२

था ॥ यद्यथा धिक कि कि लि ह्यमन वदिता ॥ तत्तु कुरु लाम स र्वमया वा र्त्त वि लयत ॥ १३ ॥ दाना म क नू य व स र्व  
 यथा कुरु न ॥ १४ ॥ दया दय विवाने कु गता वा नू य वरुति ॥ १५ ॥ नया रा धिका ना र्त्त कुरु न कुरु मा विव ॥ यत्तु नय  
 रवा कुरु र्त्त व दिता नू सान ग ॥ तथे किय धर्म द विस र्व ल कुरु ल किर्त्त ॥ १६ ॥ उज्ज्विन स र्व व व लिर्त्त य गु मू कुरु ॥  
 जून कर्त्त क मने वने व तथ विवान ॥ १७ ॥ यत्तु यथा नना वरु ॥ १८ ॥ नू य कुरु य नि कि र्त्त यत्तु ॥ यत्तु य गु ल मू य न य नु ल  
 लास मू दान यत्तु ॥ १९ ॥ नू मू मरुत्त मू दाय जल न लाय यत्तु ॥ २० ॥ तता मा र्त्त य मू न वा कुरु व दाय ला हिर्त्त ॥ २१ ॥ द र्त्त मा  
 न व मरुत्त व दया ल्य गु मरुत्त क ॥ यत्तु वया यो गि ना र्त्त र्त्त ग र्त्त अत द र्त्त क र्त्त ॥ २२ ॥ ग य व र्त्त कुरु मू दाय ग य र्त्त व दि ग र्त्त  
 रुद्र ॥ २३ ॥ विना द ग व र्त्त ला म नू न य उ कुरु द ग ॥ २४ ॥ यत्तु र्त्त ला सि दू र्त्त मरुत्त म य मू दान यत्तु ॥ २५ ॥ ग यान यित स र्त्त रु य  
 य द नि का र्त्त म ॥ २६ ॥ सान र्त्त र्त्त यो ग क म र्त्त वा ज मू र्त्त र्त्त ॥ २७ ॥ म र्त्त र्त्त क र्त्त र्त्त ला र्त्त त द नू क र्त्त यत्तु ॥ २८ ॥ यजाय जि र्त्त क  
 य य गि य ॥ २९ ॥ य वि सा विव ॥ ३० ॥ मा कुरु र्त्त र्त्त वा क म नू ॥ ३१ ॥ सि दू र्त्त दान कुरु ॥ ३२ ॥ यजा कुरु र्त्त यत्तु साना नार्त्त व नान र्त्त ॥ ३३ ॥







2